सक्सेस मिरर

सफलता का कैप्सूल

Visit us at : www.pdgroup.in

वर्ष : 14 | अंक : 156 | अप्रैल : 2023

इस अंक में...

5 सम्पादकीय

7 समसामयिकी घटना संग्रह

8 समसामयिकी संक्षिप्तकियाँ

18 आर्थिक घटना संग्रह

- वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने संसद में पेश किया बजट 2023-24
- आरबीआई ने रेपो दर में 25 आधार अंकों की बढ़ोतरी की
- रिलायंस ने पेश किया हाइड्रोजन से चलने वाला ट्रक

23 राष्ट्रीय घटना संग्रह

- संचार मंत्री अश्विनी वैष्णव ने अमृतपेक्स 2023 का उद्घाटन किया
- हरियाणा में बनेगा उत्तर भारत का पहला परमाणु संयंत्र
- गुलमर्ग में खुला भारत का पहला ग्लास इग्लू रेस्टोरेंट

27 अन्तर्राष्ट्रीय घटना संग्रह

- नादी में 12वें विश्व हिन्दी सम्मेलन का आयोजन
- तुर्की में 7·8 तीव्रता का भूकम्प, 500 से ज्यादा लोगों की मौत
- दुनिया के सबसे लोकप्रिय नेताओं की सूची में प्रधानमंत्री मोदी शिखर पर

31 खेल खिलाड़ी

- 5वें खेलो इण्डिया यूथ गेम्स में महाराष्ट्र शीर्ष पर
- क्रिकेट के तीनों प्रारूप में शतक लगाने वाले पहले भारतीय कप्तान बने रोहित शर्मा
- रविचन्द्रन अश्विन सबसे तेज 450 विकेट लेने वाले दूसरे गेंदबाज

34 महत्वपूर्ण तथ्य संग्रह

37 समसामयिक वस्तुनिष्ठ प्रश्न

लेख

41 **ऐतिहासिक लेख**—दिल्ली में इंद्रप्रस्थ की खोज

43 **नारी सशक्तिकरण लेख**—आधी आबादी का संघर्ष

44 **कृषि लेख**—भारत की मिलेट क्रांति

45 **प्राकृतिक संसाधन लेख**—मिट्टी को स्वस्थ रखना बेहद जरूरी

विविध/सामान्य

75 **राजस्थान : विविध**

78 **प्रथम पुरस्कृत तार्किक प्रतियोगिता**

80 **तार्किक प्रतियोगिता क्रमांक-153 का परिणाम**

81 **रोजगार अवसर**

हल प्रश्न-पत्र

46 हरियाणा कॉमन एलिजिबिलिटी टेस्ट (CET) परीक्षा, 2022

मॉडल हल

54 आगामी मध्य प्रदेश में समूह-2 उपसमूह-4 के अन्तर्गत सहायक संपरीक्षक, जनसम्पर्क अधिकारी, सहायक जनसम्पर्क अधिकारी व समकक्ष पदों की भर्ती तथा राजस्व विभाग के अन्तर्गत पटवारी (कार्यपालिक) पद—2022-23 हेतु विशेष हल प्रश्न

65 आगामी आई.बी.पी.एस. द्वारा आयोजित बैंक लिपिकीय संवर्ग परीक्षा हेतु विशेष हल प्रश्न

संस्थापक सम्पादक : स्व. श्री महेन्द्र जैन | सम्पादक : राहुल जैन | रजिस्टर्ड ऑफिस : 2/11ए, स्वदेशी बीमा नगर, आगरा–2

ई-मेल : सम्पादकीय : publisher@pdgroup.in कस्टमर केयर : care@pdgroup.in

- सम्पादकीय ऑफिस : 1, स्टेट बैंक कॉलोनी, खन्दारी, आगरा-मथुरा बाईपास, **आगरा**–282 005 — **फोन**–2531101, 2530966
- दिल्ली ऑफिस : 4845, अंसारी रोड, दरियागंज, **नई दिल्ली**–110 002 — **फोन**–011-23251844, 43259035
- पटना ऑफिस : पारस भवन (प्रथम तल), खजांची रोड, **पटना**–800 004 — **मो**–09334137572
- हैदराबाद ऑफिस : 16-11-23/37, मूसारामबाग, टीगन गुडा, आर.टी.ए. ऑफिस के सामने मेन रोड, (यूनियन बैंक के बगल में), **हैदराबाद**–500 036 (तेलंगाना) — **मो**–09391487283
- हल्द्वानी ऑफिस : 8-310/1, ए. के. हाउस, हीरानगर, **हल्द्वानी**, जिला–नैनीताल–263 139 (उत्तराखण्ड) — **मो**–07060421008

सर्वाधिकार सुरक्षित, प्रकाशक की पूर्व लिखित अनुमति के इस मैगजीन का कोई भी भाग न तो पुनरुत्पादित किया जाएगा और न किसी भी रूप में, जैसे–इलेक्ट्रॉनिक, मेकेनीकल, फोटोकॉपीइंग, रिकॉर्डिंग अथवा अन्य प्रकार स्टोर किया जाएगा. हालांकि इस संस्करण में प्रकाशित सूचनाओं के सही होने का हरसम्भव प्रयास किया गया है, फिर भी न तो प्रकाशक व न अन्य कोई कर्मचारी किसी भी त्रुटि अथवा छूट के लिए उत्तरदायी होगा. अस्वीकृत रचनाओं को लेखकों को वापस भेजने के लिए उनके साथ स्वयं का पता लिखा हुआ लिफाफा मय उपयुक्त डाक टिकटों के प्राप्त होगा. रचना के देर से पहुँचने अथवा रास्ते में खो जाने की कोई जिम्मेदारी नहीं ली जाती. पत्रिका में लेखकों द्वारा प्रेषित बयानों, विचारधाराओं तथा प्रकाशित विज्ञापनों की कोई जिम्मेदारी **'सक्सेस मिरर'** की नहीं है.

सम्पादकीय

मातृभाषा का सम्मान कीजिए

"हमें विज्ञान की शिक्षा मातृभाषा में देनी चाहिए. अन्यथा, विज्ञान, विज्ञान एक छद्म कुलीनता और मगरूरियत भरी गतिविधि बनकर रह जाएगा और ऐसे में, विज्ञान के क्षेत्र में आम लोग काम नहीं कर पाएंगे."

–सर सी.वी. रमन

स्वाधीनता के पूर्व चरखा, सत्याग्रह और हिन्दी तीनों का गठबन्धन था, इसमें कोई संदेह नहीं, पर स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद चरखा सरकारी सहायता का भिखारी बना, सत्याग्रह विघटन का साधन बना और हिन्दी बन गई गरीब की लुगाई. चरखा सत्याग्रह और हिन्दी तीनों की हुण्डियाँ भुनाई गईं और ओवरड्राफ्ट भी ले लिए गए. जब हिन्दी के तथाकथित आदमियों ने उसके पराजय-पत्र पर हस्ताक्षर किए और सफेद झण्डा दिखाकर हथियार डाल दिए, तो हम यह कहने को विवश हो गए कि हिन्दी अपनों से ही हारी, उसका यह दुर्भाग्य था कि वह राष्ट्रीय आन्दोलन के साथ जुड़ी और भारत की जनता की भाषा कहलाई.

राज्य-भाषा घोषित होते ही हिन्दी अपने निसर्ग से तो विलग हुई ही, वह राज्य से उपेक्षित होकर अज्ञात निरवधि वनवास के लिए भी विवश हुई.

महात्मा गांधी के नाम की हुण्डी सब भुनाते रहते हैं, सब उनके वारिस बनने का दावा करते हैं, परन्तु कोई यह नहीं जानना चाहता है कि वसीयत में वह अपने सपूतों के लिए क्या लिख गए हैं? हिन्दी के प्रति उनका लगाव था, यह तथ्य भी सम्भवतः उनके बहुत थोड़े से सपूतों को विदित है.

'गांधी हिन्दी दर्शन' में राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के जीवन का वह प्रसंग, जो उनके हिन्दी अनुराग का प्रतीक है, अत्यन्त प्रेरणा-दायक है. अपने उदीयमान कर्णधारों के विचारार्थ यहाँ उद्धृत किया जाता है. इसके लेखक हैं, डॉ. वीरेन्द्र शर्मा दिल्ली.

"बापू वाइसराय लॉर्ड माउण्टबेटन को पत्र लिख रहे थे. वह पत्र कुछ विशेष गम्भीर था. पत्र लिखने में बापू काफी तल्लीन थे. उन दिनों वह दिल्ली की एक कालौनी में ही रहते थे. बापू से कुछ कदम दूर दो सगे भाई-बहन अंग्रेजी में वार्तालाप कर रहे थे.

बापू ने पत्र लिखना बन्द कर दिया और उन दोनों को इस संस्मरण के लेखक द्वारा बुलवाया. वे दोनों बहुत खुश थे कि बापू ने उनको खास इस वक्त बुलाया है. यद्यपि बापू उन्हें भली प्रकार पहचानते थे–वे दोनों उनके परिवार के सदस्य जैसे थे, तथापि बापू ने गम्भीरतापूर्वक उनसे पूछा, "तुम दोनों कौन हो?" प्रश्न सुनकर वे दोनों स्तब्ध रह गए.